संदेश 3

दुल्हन की परिपक्वता

पवित्रशास्त्र पठन: प्रक. 19:6-9; यूह. 3:29; याक. 5:7;
मत. 5:48; कुल. 1:28-29; 3:10-11

I. यूनानी में *परिपक्व* शब्द का अर्थ है "अंतिम बिंदु पर":

A. रूपांतरित होना हमारे स्वाभाविक जीवन में चयापचय रूप से परिवर्तित होना है; परिपक्व होना उस दिव्य जीवन से भरा होना है जो हमें बदलता है—इब्र. 6:1; कुल. 4:12; रो. 12:2; 2 पत. 1:3।

B. रुपान्तरण का अंतिम चरण परिपक्वता, जीवन की परिपूर्णता है—आ. 4।

C. परिपक्व विश्वासी मसीह की देह को जानता है और उसकी परवाह करता है, देह-सचेत और देह-केंद्रित होता है—1 कुर. 12:16, 18-19, 21, 24।

II. जैसा कि नए नियम में उपयोग किया गया है, परिपक्व शब्द का तात्पर्य विश्वासियों के मसीह के जीवन में पूर्ण-विकसित और सिद्ध होने से है, जिसे उन्होंने पुनरुज्जीवन के समय प्राप्त किया था। —तीत. 3:5; 1 पत. 1:3, 23; मत. 5:48:

A. हमें अपने आप से कभी भी संतुष्ट नहीं होना चाहिए बल्कि मसीह के जीवन में वृद्धि और परिपक्वता का पीछा करना चाहिए—फिलि. 3:12, 14।

B. हमें उन बातों को भूलने के द्वारा, जो पीछे रह गई हैं, और उन बातों की ओर बढ़ने के द्वारा, जो आगे हैं, परिपक्वता की ओर बढ़ने, परिपक्वता पर लाए जाने की जरूरत है, और सहस्राब्दी राज्य में मसीह के पूर्णतम आनन्द के लिए मसीह के पूर्ण आनन्द और प्राप्ति के लिए अनुसरण करना है—आआ. 12-15।

C. आत्मिक जीवन में परिपक्वता की पूर्व मांग दिव्य जीवन में निरंतर बढ़ते रहना है—इफ. 4:15।

D. मसीह के जीवन में विश्वासियों की वृद्धि और परिपक्वता का अंतिम परिणाम पूर्ण-विकसित मनुष्य है—मसीह की देह के रूप में कलीसिया एक परिपक्व मनुष्य में वृद्धि कर रही है—आ. 13।

III. अपनी पत्री में, याकूब एक किसान का उदाहरण देता है जो धीरज के साथ भूमि की बहुमूल्य उपज की प्रतीक्षा कर रहा है—5:7:

A. प्रभु यीशु वास्तव में असली किसान, अद्वितीय किसान है—मत. 13:3।

B. जब हम धीरज के साथ प्रभु के आने की प्रतीक्षा कर रहे हैं, वह, असली किसान के रूप में, धैर्य के साथ जीवन में हमारी परिपक्वता की प्रतीक्षा कर रहा है, जो उसके खेत के पहले फल और फसल के रूप में हैं—प्रक. 14:4, 14-15।

C. यदि हम प्रार्थना करते हैं, "प्रभु, जल्दी वापस आ," तो हो सकता है प्रभु कहे, "जबकि तुम मेरे वापस आने की प्रतीक्षा कर रहे हो, मैं तुम्हारी परिपक्वता की प्रतीक्षा कर रहा हूँ; केवल तुम्हारी परिपक्वता ही मेरे आगमन को शीघ्र कर सकती है।"

D. यह एहसास करना हमारे लिए बहुत मददगार है कि यदि हम प्रभु के वापस आने की प्रतीक्षा करने के बारे में गंभीर हैं, तो हमें जीवन में परिपक्वता तक बढ़ने की आवश्यकता है।

IV. परिपक्व होना मसीह का हमारे अंदर पूर्ण रूप से रूप ले लेना है; इसका अर्थ यह भी है कि हम पूरी तरह से उसके स्वरूप में रूपान्तरित हो गए हैं—गल. 4:19; 2 कुर. 3:18:

A. हमारे पुनरुज्जीवन के समय से, प्रभु हमारे अंदर कार्य कर रहा है ताकि हमारे पास उसका स्वरूप हो—आ. 18; रो. 8:29।

B. जब प्रभु ने अपने स्वरूप को पूरी तरह से हमारे अंदर कार्य कर लिया होगा और हमारे माध्यम से पूरी तरह से अभिव्यक्त होता है, तो हम जीवन में परिपक्व होंगे—इफ. 3:16-17।

V. श्रेष्ठगीत का अध्याय 3 हमें खोजी जन की परिपक्वता दिखाता है, और अध्याय 4 यह व्याख्या करते हुए जारी है कि ऐसी परिपक्वता तक इच्छा को वश में करने से पहुंचा जाता है; खोजी जन की परिपक्वता का राज़ यह है कि उसकी इच्छा पूरी तरह से वश में हो गई है और पुनरूत्थित हो गई है—आ. 4:

A. गर्दन परमेश्वर के अधीन मानव इच्छा को सूचित करती है; प्रभु हमारी इच्छा के समर्पण को सबसे सुंदर चीज मानता है—आआ. 1अ, 4।

B. यदि हमारे पास एक अधीन होने वाली इच्छा है, तो हमारी इच्छा दाऊद की मीनार की तरह अभिव्यक्त होती है जिसमें सभी प्रकार के हथियार हैं:

1. सबसे पहले, हमारी इच्छा को वश में किया जाना चाहिए; तब यह पुनरुत्थान में मजबूत होगी और दाऊद की मीनार की तरह, आत्मिक युद्ध के लिए शस्त्रागार होगी—इफ. 6:10।
2. आत्मिक युद्ध के हथियार हमारे वश में और पुनरुत्थित इच्छा में रखे जाते हैं—2 कुर. 10:3-5।

VI. पौलुस की सेवकाई का लक्ष्य प्रत्येक मनुष्य को एक नए मनुष्य के लिए मसीह में परिपक्व, पूर्ण विकसित प्रस्तुत करना था—कुल. 1:28-29; 3:10-11:

A. कुलुस्सियों 1:28 में "पूर्ण विकसित" अनुवादित यूनानी शब्द का अनुवाद "सिद्ध," "पूर्ण," या "परिपक्व" भी किया जा सकता है।

B. पौलुस की सेवकाई दूसरों में मसीह को प्रदान करने की थी ताकि वे मसीह में पूर्ण-विकास करने तक परिपक्व होने के द्वारा सिद्ध और संपूर्ण हो जाएँ।

VII. उत्पत्ति 37—47 याकूब की परिपक्वता की प्रक्रिया का एक अभिलेख है:

A. उत्पत्ति 27 में हम एक प्रतिस्थापनकर्ता को; अध्याय 37 में, एक रूपांतरित व्यक्ति को; और अध्याय 47 के अंत में, एक परिपक्व व्यक्ति को देखते हैं।

B. रूपांतरण का अंतिम चरण परिपक्वता, जीवन की परिपूर्णता है:

1. परमेश्वर का अनन्त उद्देश्य केवल हमारे रुपान्तरण और परिपक्वता के माध्यम से पूरा हो सकता है—1:26; कुल. 1:28; 2:19।
2. परिपक्वता हमारे अन्दर दिव्य जीवन को तब तक बार-बार प्रदान करने का विषय है जब तक कि हमारे पास जीवन की परिपूर्णता न हो जाए—यूह. 10:10।

C. परिपक्वता क्षमता के विस्तार की बात है—भज. 4:1:

1. जीवन में परिपक्वता पवित्र आत्मा के अनुशासन को प्राप्त करने का योग है—इब्र. 12:5-11।
2. दूसरे लोग ऐसे हो सकता है ऐसे व्यक्ति को देखें जो जीवन में परिपक्व हो गया है, लेकिन वे पवित्र आत्मा के संचित अनुशासन को नहीं देख सकते हैं जिसे उस व्यक्ति ने वर्षों से दिन-प्रतिदिन गुप्त रूप से प्राप्त किया है—2 कुर. 1:8-10; उत. 47:7, 10।

D. परमेश्वर संप्रभुतापूर्वक व्यक्तियों, चीजों और घटनाओं का उपयोग हमें उन सभी चीजों से खाली करने के लिए जिन्होंने हमें भर दिया हैं और हर व्यस्तता को दूर करने के लिए करेगा ताकि हमारे पास परमेश्वर से भरे जाने की बढ़ी हुई क्षमता हो—लूक. 1:53; मत. 5:6।

E. याकूब का जीवन प्रकट करता है कि हमारे साथ जो कुछ भी होता है वह हमारे रूपांतरण और परिपक्वता के लिए परमेश्वर की संप्रभुता के अधीन है, कुछ भी आकस्मिक नहीं है:

1. परिपक्व होने के लिए, याकूब को सबसे पहले यूसुफ को खोना पड़ा, जो उसके हृदय का खजाना था—उत. 37:31-35।
2. एक परिपक्व विश्वासी ने सीखा है कि परमेश्वर हर तरह की परिस्थिति में उसकी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए दयालु और सर्व-पर्याप्त है—43:11, 13-14; 17:1; फिलि. 1:19-21अ; 4:11-12; प्रसं. 1 तीम. 6:6-8।
3. उसका भरोसा और विश्राम पूरी तरह से उसके सर्व-पर्याप्त परमेश्वर की दया पर है, अब खुद में या अपनी योग्यता में नहीं रहा—रो. 9:16।
4. याकूब की परिपक्वता का सबसे मजबूत संकेत उसका दूसरों को आशीष देना था—उत. 47:7, 10; 48:14-16; इब्र. 7:7।

VIII. परिपक्व दुल्हन परमेश्वर की इच्छा और उद्देश्य का लक्ष्य है—प्रक. 19:7-9:

A. सामूहिक दुल्हन की तैयारी जयवंतों के जीवन में परिपक्वता पर निर्भर करती है—आ. 7; इब्र. 6:1; फिलि. 3:12-15; इफ. 4:13।

B. मेमने का विवाह परमेश्वर के नए नियम के गृहप्रबंध की पूर्णता का परिणाम है, जो अपने दिव्य जीवन में अपने न्यायिक छुटकारे और अपने जैविक उद्धार के माध्यम से मसीह के लिए एक दुल्हन, कलीसिया हासिल करना है—उत. 2:22; रो. 5:10; प्रक. 19:7-9; 21:2।

C. यूहन्ना के सुसमाचार में, मसीह को मेमने के रूप में जो पाप को उठा ले जाने के लिए आया और दूल्हे के रूप में जो दुल्हन को पाने के लिए आया दोनों के रूप में प्रकट किया गया है—3:29।

D. मसीह का लक्ष्य पाप को दूर करना नहीं है; यह दुल्हन को पाना है:

1. प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में, हम देखते हैं कि मसीह मेमना और आने वाला दूल्हा है; इसलिए, दूल्हे के रूप में, उसका विवाह होना चाहिए—19:7-9।
2. मेमने का विवाह एक सार्वभौमिक विवाह होगा, यह छुड़ाने वाले और छुड़ाए गए लोगों का विवाह होगा।
3. मसीह दूल्हे के रूप में आ रहा है, और हम दुल्हन के रूप में जा रहे हैं।

E. एक बहुत ही महत्वपूर्ण विषय दुल्हन की तैयारी है—आ. 7:

1. प्रकाशितवाक्य 19:8 और 9 के अनुसार, पत्नी, मसीह की दुल्हन, यहाँ सहस्राब्दी के दौरान केवल जयवन्त होते विश्वासियों से मिलकर बनी है।
2. दुल्हन की तैयारी जयवंतों के जीवन में परिपक्वता पर निर्भर करती है, जो अलग-अलग व्यक्ति नहीं बल्कि सामूहिक दुल्हन हैं।
3. प्रकाशितवाक्य 19:6 में बड़ी भीड़ की आवाज़ यह घोषणा करती है, "हालेलुयाह! क्योंकि हमारा प्रभु परमेश्वर सर्वशक्तिमान राज करता है":
   a. परमेश्वर का राज, राज्य, मेमने के विवाह से संबंधित है।
   b. विवाह प्रभु के राज, राज्य को लाएगा, क्योंकि विवाह में बुलाए गए सभी अतिथि सामूहिक दुल्हन और दूल्हे के सह-राजा दोनों होंगे; उसके सभी सह-राजा उसकी सामूहिक दुल्हन होंगे।
   c. जयवंतों के लिए, सहस्राब्दी राज्य का हज़ार वर्ष विवाह भोज होगा।
   d. विवाह भोज में आमंत्रित सभी लोग राजाओं के रूप में हज़ार वर्ष के शासन में भी सहभागी होंगे।
   e. जयवंतों के लिए, राज्य में मसीह के साथ राज करना विवाह भोज होगा—आ. 9।